प्रस्तावना

अर्लिंगटन राष्ट्रीय कब्रिस्तान जिस पहाड़ी पर स्थित है और जहाँ से वॉशिंगटन D.C. दिखाई देता है, वहाँ एक स्मारक है जो "अज्ञात सिपाहियों का कब्र" कहलाता है। उन कब्रों में, प्रथम विश्व युद्ध के समय का एक अज्ञात अमरीकी सिपाही दफनाया गया है। उस स्मारक में निम्न शब्द खोदे गए हैं:

यहाँ महिमा में
एक अमरीकी सिपाही विश्राम कर रहा है
जिसे केवल परमेश्वर ही जानता है।

नये नियम में, क्रूस का लगभग एक अज्ञात सिपाही है जिसका नाम "तीतुस" है। पौलुस ने उसे "मेरा साथी, और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्मी" संबोधित किया है (2 कुरिं. 8:23), लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस से संबंधित कार्यों में उसका उल्लेख नहीं है। विलियम एम. रैमसे ने उसे "आदि मसीही इतिहास का सबसे रहस्यमय व्यक्ति"[1] कहा है।

जो पत्री उसको लिखी गई है वह लगभग अज्ञात है। 2 तीमुथियुस और फिलेमोन की पत्री बीच में रखा गया तीतुस की पत्री, अक्सर "इनके छाए में खो जाती है।"[2] फिर भी, जब हम इस पत्री को ध्यान से पढ़ते हैं, तो हमें पता चलता है कि दूसरी पत्रियों की तुलना में, यह पत्री अलग-अलग समूह के लोगों को मसीही होने के नाते कैसे जीना चाहिए, के बारे में सूचित करता है। यद्यपि यह अवश्य संक्षिप्त है, लेकिन अद्‌भुत रूप से यह अति व्यापक है।[3] हम, "कौन?"; "कहाँ?"; "कब?"; "क्यों?"; और "क्या?" इत्यादि प्रश्नों से प्रारंभ करेंगे।

कौन?

पौलुस ने इस पत्री को "तीतुस के नाम जो विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र है" को संबोधित किया है (1:4)। तीतुस कौन था? उसके बारे में सीमित जानकारियां हैं, लेकिन जो सीमित जानकारियां उपलब्ध है, वे बड़ी ही रोचक हैं।

हम जानते हैं कि तीतुस एक यूनानी था (गला. 2:3), लेकिन हम उसके नाम के अर्थ के बारे में अधिक निश्चित् नहीं हैं। कुछ इसको टाइटन (यूनानी मिथ्या में, यह एक राक्षस था जिसने संसार पर तब तक शासन किया जब तक कि उसको ओलिंपयन देवताओं ने नहीं हराया) से संबंधित करते हैं; उनका मत है कि यह

नाम "राक्षस" का पर्याय है। अन्य लोगों का मत है कि यह नाम "सम्मानित" या "मनभाऊ" का विश्लेषण करता है। "तीतुस" रोम के एक सम्राट का भी नाम था (79-81 ई.)।

पौलुस ने तीतुस को "विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र" करके संबोधित किया है, जो यह बताता है कि उसने तीतुस को शिक्षा और बपतिस्मा दिया था। पहली बार जब हम उसके बारे में पढ़ते हैं तो वह अन्ताकिया में था;[4] हो सकता है कि यहाँ उसकी भेंट पौलुस से हुई हो और उससे शिक्षा ग्रहण की हो। हाँ, इसकी संभावना भी जताई जाती है कि यह कोई अन्य नगर भी हो सकता था, जिसका पौलुस ने भ्रमण किया था।

किसी समय, तीतुस पौलुस का सहयात्री भी बना (देखें 2 कुरिं. 2:13; 7:6; 8:6, 23; 12:18)। तो इस बात पर प्रश्न उठाया जा सकता है कि फिर लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में उसका उल्लेख क्यों नहीं किया। कुछ लोगों की मान्यता है कि वह लूका का भाई या उसका सगा संबंधी था और शालीनता के कारण लूका ने उसका उल्लेख नहीं किया था।[5] संभवतः लूका ने मुख्य घटनाओं और मुख्य पात्रों के विश्लेषण के कारण अन्य बातों का उल्लेख नहीं किया था।

जब तीतुस के बारे में चर्चा की जाती है, तो तीमुथियुस से उसकी तुलना अपरिहार्य है। संभवतः दोनों का हृदय परिवर्तन पौलुस के द्वारा ही हुआ था (तुलना कीजिए 1 तीमु. 1:2 और तीतुस 1:4), लेकिन हो सकता है कि तीतुस उम्रदार रहा हो (तुलना कीजिए 1 तीमु. 4:12 और तीतुस 2:6-8)। ऐसा लगता है कि तीमुथियुस के समान उसको स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या नहीं था (1 तीमु. 5:23)। किसी प्रचारक ने उनको "डरपोक तीमुथियुस" और "मजबूत तीतुस" चरितार्थ किया है।[6]

कभी-कभी तीतुस को "पौलुस का समस्या-साधक" भी कहा जाता है। बाइबल के कुछ स्थानों में तीतुस की भूमिका सदैव समस्या ग्रस्त परिस्थितियों में किया गया है। हम इस प्रकार की पहली परिस्थिति गलातियों 2 में पढ़ते हैं।[7] यरूशलेम के यहूदी शिक्षक यह घोषणा कर रहे थे कि "उन्हें [अन्यजाति] खतना कराना और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देना चाहिए" (प्रेरितों. 15:5; देखें गला. 2:4)। यह आदि कलीसिया की सबसे कठीन घड़ी थी। यदि इस गलत शिक्षा का सामना न किया गया होता तो कलीसिया यहूदी विश्वास के खतरनाक अनुबंध के साथ हो लेता। पौलुस, तीतुस को "प्रदर्शन A" के रूप में लेकर यह बताने के लिए यरूशलेम के लिए निकल पड़ा कि परमेश्वर की कलीसिया का सदस्य बनने के लिए, अन्यजाति मसीही को खतना या अन्य यहूदी संस्कार अपनाने की आवश्यकता नहीं है (गला. 2:1)।

हम केवल इसकी कल्पना मात्र ही कर सकते हैं कि कैसे परमेश्वर की संतान होने के लिए व्यवस्था का अनुमोदन करने वालों ने तीतुस की छानबीन की होगी। यहूदीकरण करने वालों का जबरदस्त दबाव था। यद्यपि, पौलुस यह बता सका "उन के आधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना" (गला. 2:5)। तीतुस को "खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया" (गला. 2:3)।

कुरिंथुस [की कलीसिया], एक अन्य तनाव भरी परिस्थिति का विश्लेषण करता है, जहाँ कलीसिया की समस्याएं चरम पर थी, जिसको एक मजबूत अगुवेपन की आवश्यकता थी। "कठीन व नाजुक 'कुरिंथियों की परिस्थिति' का सामना करने के लिए, पौलुस किस पर भरोसा कर सकता था"[8]? तीतुस (2 कुरिं. 12:18)।[9] पौलुस, तीतुस की वापसी के लिए इतना चिंतित था कि उसको अपने प्रचार कार्य में मन लगाना भी भारी पड़ रहा था (2 कुरिंथियों 2:12, 13)। अंत में, तीतुस अच्छा समाचार लेकर लौटा; पौलुस का उस पर भरोसा निर्णायक ठहरा (2 कुरिं. 7:5-16)।[10] कुछ लोग बुरे मामले को और अधिक बुरा बना देते हैं; लेकिन, तीतुस जैसे लोग, उसको बेहत्तर बनाते हैं।

विलियम बारक्ले ने तीतुस को एक ऐसा सहकर्मी चरितार्थ किया है जो "किसी भी मौसम में आपके साथ चलने को तैयार रहता है।"[11] पौलुस ने इस युवा प्रचारक को उच्च दर्जा दिया है। उसने उसको "विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र" (1:4), परमेश्वर के परिवार में उसका "भाई" (2 कुरिं. 2:13), और प्रभु में उसका "साथी, और तुम्हारे लिये मेरा सहकर्मी" (2 कुरिं. 8:23) संबोधित किया है।

नये नियम में तीतुस का वर्णन एक बार और किया गया है। 2 तीमुथियुस 4:10 में हम पढ़ते हैं कि वह दलमतिया में था, इसमें कोई संदेह नहीं है कि पौलुस ने उसे एक और कठीन कार्य के लिए वहाँ भेजा था। पौलुस ने संभावित रूप से तीतुस को अन्य कठीन कार्य दिए थे, लेकिन उनमें से क्रेते से बढ़कर दूसरा कोई अधिक चुनौती भरा नहीं था। प्राचीन परंपरा के अनुसार, वह बुढ़ापे में क्रेते लौटकर आता है और वहाँ उसको चौरानबे वर्ष की अवस्था में गाड़ा जाता है। उत्तरार्द्ध परंपरा यह बताती है कि तीतुस क्रेते का प्रथम "बिशप" था,[12] लेकिन यह परंपरा अधिक विश्सनीय नहीं है।

कहाँ? और कब?

तीतुस की पत्री के आरंभिक पंक्तियों में पौलुस ने कहा, "मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था" (1:5)। क्रेते द्वीप की लम्बाई 156 मील (पूर्व से पश्चिम) और चौड़ाई 8 से 35 मील (उत्तर से दक्षिण) के लगभग है। यह भूमध्य सागर में, यूनान और तुर्की के दक्षिण में स्थित है। क्रेते के कुछ संदर्भों में से एक संदर्भ प्रेरितों के काम 27 अध्याय में पाया जाता है। रोम यात्रा के दौरान, पौलुस का जहाज इस द्वीप के संरक्षण में ठहरा और शुभलंगरबारी बंदरगाह पर लंगर डालकर उसने कुछ समय वहाँ बिताया था (प्रेरितों. 27:7, 8)। चूँकि पौलुस को सैदा में अपने मित्रों को मिलने की स्वतंत्रता प्रदान की गई थी (प्रेरितों. 27:3), तो संभवतः उसको उसी प्रकार का सत्कार शुभलंगरबारी में भी मिला होगा। यह वही समय रहा होगा जब उसने क्रेते के मसीहियों के साथ भेंट किया होगा। क्रेते की कलीसिया के लिए पौलुस की रूचि यहीं जागृत हुई होगी, जिसने उसको भविष्य में वहाँ जाने के लिए प्रेरित किया होगा।

ऐतिहासिक रूप से, भूमध्य सागर में क्रेते की भौगोलिक स्थिति के कारण, यह सर्वसंपन्न द्वीप था; लेकिन नये नियम युग में क्रेते के लोग एक ऐसे युग में रह रहते थे जिसे हम "एक समय का गर्वान्वित और संपन्न सभ्यता का सांस्कृतिक कब्रिस्तान" कह सकते हैं।[13] इस द्वीप के निवासियों ने अवांछनीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। जिस तरह कुरिंथुस को अनैतिकता की उपमा दी गई थी उसी तरह क्रेते का नाम बेईमानी के लिए प्रसिद्ध हो गया था। "कुरिंथियों जैसे होने" का तात्पर्य "कुरिंथुस वासियों के समान चरित्रहीन जीवन जीना था," जबकि "क्रेते वासी होने" का तात्पर्य "क्रेते के लोगों जैसे बोलना है" - अर्थात् "झूठ बोलना," "धोखा देना" इत्यादि।[14] उन्हीं के कवि एपीमेनीडेस ने लिखा, "क्रेते वासी झूठे, दुष्ट जानवर, आलसी पेटू हैं" (1:12)। स्पष्ट रूप से, कई क्रेते वासियों पर यह विश्लेषण अभी भी लागू था।

हम क्रेते को "पथरीली भूमि" की श्रेणी में रख सकते हैं (देखें लूका 8:6, 13); लेकिन वचन रूपी बीज वहाँ बोया जा चुका था (देखें लूका 8:5, 11), और पूरे द्वीप में कलीसिया की स्थापना हो चुका था (देखें तीतुस 1:5)। हमें यह पता नहीं है कि कैसे और कब क्रेते में सुसमाचार प्रचार किया गया था। पेंतेकुस्त के दिन क्रेते के यहूदी यरूशलेम में उपस्थित थे (प्रेरितों. 2:11)। उनमें से कुछ लोगों ने सुसमाचार का अनुकरण किया होगा और तब, जब मसीही लोग तितर बितर हुए (प्रेरितों. 8:1, 4) तो वे यीशु की कहानी लेकर द्वीप लौट आए होंगे।

यद्यपि यह ऐसा ही हुआ, मसीह की कलीसिया इस द्वीप में स्थापित हो गया। इनमें से अधिकांश कलीसिया छोटी थी और वे कई विषयों पर संघर्ष कर रहे थे। किसी तरह पौलुस को द्वीप की आत्मिक आवश्यकता के बारे में पता चला। जब पौलुस गृह नजरबंद से छूटा, तो यह एक स्थान है जहाँ उसने भ्रमण किया था। जब वह वहाँ से जा रहा था तो उसने तीतुस को कार्य पूरा करने के लिए इस द्वीप में छोड़ा था।

सामान्य शीर्षक के अंतर्गत् अंकित "कहाँ?" का विश्लेषण। उप शीर्षक से हम यह पूछ सकते हैं कि जब पौलुस ने तीतुस की पत्री लिखा तब वह कहाँ था। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि "हम नहीं जानते हैं।" संभवतः वह निकुपुलिस के मार्ग में था (3:12), लेकिन उसकी सही स्थिति के बारे में कई अनुमान लगाए जा सकते हैं: मकिदुनिया, इफिसुस, और यहाँ तक कि कुरिंथुस भी हो सकता है। हम यह प्रश्न भी जोड़ सकते हैं "कब?": पत्री कब लिखी गई थी? इसके बारे में हम निश्चित्ता से यह कह सकते हैं कि पौलुस ने इसे रोम में अपनी पहली व दूसरी बन्धुआई के दौरान लिखा था, संभवतः लगभग उसी दौरान जब 1 तीमुथियुस - जो सन् ई. 63 या 64 में लिखा गया था।

क्यों? और क्या?

पौलुस ने तीतुस को "क्यों" लिखा? पत्री की विषय वस्तु "क्या" है? पौलुस ने तीतुस को कहा, "मैं इसलिये तुझे क्रेते में छोड़ आया था, कि तू शेष रही हुई बातों

को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे" (1:5)। प्राचीनों की नियुक्ति अध्याय 1 की विषय वस्तु है, जबकि अध्याय 2 और 3 की विषय वस्तु दूसरे मामलों का है, जिनको "सुधारने" की आवश्यकता है। संभवतः पौलुस ने तीतुस को उसके चुनौतीपूर्ण कार्यों के प्रति उत्साहित करने और प्रेरिताई की आधिकारिक पत्री भेजकर उसका साथ देने के लिए भी लिखा होगा।

चूँकि तीतुस एक व्यक्तिगत् पत्री है, इसलिए इसमें बहुत थोड़ा आन्तरिक सरंचना पाया जाता है। किसी ने ऐसा सुझाव दिया है कि अध्याय 1 कलीसिया की कमी पर केन्द्रित है, अध्याय 2 घर की कमी को संबोधित करता है और अध्याय 3 समाज की कमी को संबंधित करता है। पत्री[15] की निम्नलिखित रूपरेखा "शेष रही हुई बातों को सुधारे" निर्देशन पर आधारित हैः

अभिवादन (1:1-4)

I. मज़बूत नेतृत्व नियुक्त कर बातों को सुधारना (अध्याय 1)।
   A. जो व्यक्ति मज़बूत मसीही पति और पिता हैं, वे ही प्राचीन चुने जाने चाहिए (1:5-9)।
   B. जो व्यक्ति झूठे शिक्षकों का सामना कर सके, वे ही प्राचीन चुने जाने चाहिए (1:10-16; देखें 3:9-11)।
II. खरी शिक्षा पर जोर देकर शेष रह गई बातों को सुधारना (अध्याय 2)।
   A. खरी शिक्षा का आदेश (2:1, 7, 8, 15)।
   B. खरी शिक्षा सभी आयु वर्ग के लोगों (2:2-8) और दासों (2:9, 10) पर लागू होता है।
   C. खरी शिक्षा का विश्लेषण (2:11-14)।
III. अच्छे कार्यों को उत्साहित कर शेष रह गई बातों को सुधारना (अध्याय 3)।
   A. अच्छे कार्यों की आवश्यकता (देखें 1:16; 2:7, 14)।
      1. नागरिक के रूप में (3:1, 2)।
      2. सेवक के रूप में (3:8, 14)।
   B. अच्छे कार्यों की अभिप्रेरणा (3:3-8)।

अंतिम शब्द (3:12-15)

वारेन डब्ल्यु. वीयर्सबी ने तीतुस की पत्री को 1 तीमुथियुस का "संक्षिप्त अनुवाद" कहा है।[16] दोनों पत्रियों में लगभग समान्तर विषयों पर निर्देश पाया जाता हैः

प्राचीनों की योग्यता
1 तीमुथियुस 3:1-7
तीतुस 1:5-9

खरी शिक्षा की आवश्यकता
1 तीमुथियुस 1:10; 4:6; 6:3
तीतुस 1:9; 2:1
झूठे शिक्षक
1 तीमुथियुस 1:3-11; 4:1-5; 6:3-5
तीतुस 1:10-16; 3:9-11
विभिन्न आयु वर्ग के लोगों से संबंध रखना
1 तीमुथियुस 5:1, 2
तीतुस 2:2-6
अच्छे उदाहरण की आवश्यकता
1 तीमुथियुस 4:12-16
तीतुस 2:6-8
दासों का आचरण
1 तीमुथियुस 6:1, 2
तीतुस 2:9, 10
"विश्वासयोग्य" बातें
1 तीमुथियुस 1:15; 3:1; 4:8, 9
तीतुस 3:4-8

पहला तीमुथियुस और तीतुस की पत्री के बीच एक अंतर यह है कि तीतुस की पत्री के अंत में व्यक्तिगत् निर्देश शामिल किया गया है जबकि तीमुथियुस के नाम पौलुस की पहली पत्री में यह नहीं है। इन व्यक्तिगत् निर्देशों में, छानबीन करने से इस पत्री के अन्य कारणों के बारे में यह पता चलता हैः कि तीतुस को पौलुस की योजनाओं के बारे में सूचित रखना था (3:12, 13)।

पत्री की विषय वस्तु के संदर्भ में, हम यह कह सकते हैं कि नये नियम के दो प्रमुख सैद्धांतिक अनुच्छेद तीतुस की पत्री में पाया जाता हैः

> क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएँ; और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो (2:11-14)।

> क्योंकि हम भी पहले निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए और विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैरभाव, और डाह करने में जीवन व्यतीत करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रगट हुआ, तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए

जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें (3:3-7)।

तीतुस की पत्री का प्राथमिक तथ्य जिसके बारे में हमें जानना है वह यह है कि यह पत्री अति व्यवहारिक है। पौलुस चाहता था कि मसीही लोग यह समझें कि खरी शिक्षा खरा जीवन के द्वारा अभिव्यक्त किया जाना चाहिए। उसने तीतुस को चेताया, "मैं चाहता हूँ कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता से बोले इसलिये कि जिन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया है, वे भले-भले कामों में लगे रहने का ध्यान रखें" (3:8)।

समाप्ति नोट्स

[1]विलियम एम. रैमसे, *सेंट पॉल द ट्रेवलर एण्ड द रोमन सिटीजन* (लंदनः हॉडर एण्ड स्टॉहटन, 1897; पुनर्मुद्रित, ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः बेकर बुक हाऊस, 1962), 284. [2]गेरी डब्ल्यु. डेमारेस्ट, *1, 2 थिस्सलोनियंस, 1, 2 तीमोथी, टाइटस*, द कम्युनिकेटर्स कमेंट्री, खण्ड 9 (वाको, टेक्ससः वर्ड बुक्स, 1984), 297. [3]जीन ए. गेत्स, *ए प्रोफाइल फॉर ए क्रिश्चयन लाइफ स्टाइलः ए स्टडी आफ टाइटस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1978), 18. [4]जब पौलुस यरूशलेम से अन्ताकिया गया (14:26-15:5), तब उसने तीतुस को अपने साथ लिया (गला. 2:1-3)। [5]लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में अपना उल्लेख नहीं किया है, परंतु "हम" वाक्यांश के कारण हम जानते हैं कि वह पौलुस के साथ था (उदाहरण, प्रेरितों. 16:9-13)। [6]ईष्टसाइड चर्च आफ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओकलाहोमा, के प्रचारक डेल हार्टमैन ने इन स्मृति लेखों का प्रयोग किया है। [7]कई लोगों का मत है कि गलातियों 2 और प्रेरितों. 15 एक ही घटना का विश्लेषण करते हैं। यदि वे एक घटना न भी हो तौभी एक दूसरे से संबंधित हैं। इन घटनाओं की चर्चा डेविड एल. रॉपर, *प्रेरितों: 15-28,* ट्रूथ फॉर टूडे कमेंट्री (सर्सी, आर्कांससः रिसॉर्स पब्लिकेशंस, 2001), 1-2, में किया गया है। [8]विलियम हेड्रिक्शन, *एक्सपोजीसन आफ द पास्टोरल इपिसल*, न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री (ग्रैड रैपिड्स, मिशीगनः बेकर बुक हाऊस, 1965), 37-38. [9]संभवतः तीतुस ने कुरिंथुस वासियों को "1 कुरिंथियों" की पत्री दी होगी। [10]यरूशलेम के संतों के लिए चंदा लेने के लिए पौलुस ने तीतुस को दोबारा कुरिंथुस भेजा (2 कुरिं. 8:6, 16-24)। धन से अधिक कुछ अन्य मामले भी अति संवेदनशील हैं।

[11]विलियम बारक्ले, *द लेटर्स टू तीमोथी, टाइटस, एण्ड फाइलेमोन*, संशोधित संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेलफियाः वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1975), 232. [12]यूसिबीयस *एक्लेजियासटिकल हिस्ट्री* 3.4.6. [13]डेल हार्टमैन, "ए 'जॉब डिस्क्रिपसन' फॉर टाइटस," ईस्टसाइड चर्च आफ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 2005, में प्रस्तुत किया गया एक पाठ। [14]हेन्ड्रिक्शन, 353. [15]डेविड रॉपर, *थ्रू द बाइबल* (डिलाइट, आर्कांससः गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कम्पनी, 1999), 253-54, से उधृत। [16]वारेन डब्ल्यु. वीर्यसबी, *द बाइबल एक्सपोजिशन कमेंट्रीः न्यू टेस्टामेंट*, खण्ड 2 (व्हीटन, इलिनोयः विक्टर बुक्स, 1989), 260.